इकाई 26 सिक्का बदल गया : कृष्णा सोबती

इकाई की रूपरेखा

26.0 उद्देश्य
26.1 प्रस्तावना
26.2 सिक्का बदल गया : कथा और कथ्य
26.3 देश विभाजन और मानवीय संबंधों की कहानी
26.4 विभाजन की त्रासदी का अमानवीय अनुभव
26.5 साम्प्रदायिकता की विभीषिका
26.6 विस्थापन से उत्पन्न अलगाव की यंत्रणा
26.7 सारांश
26.8 प्रश्न/अभ्यास
उपयोगी पुस्तकें

26.0 उद्देश्य

इस खंड की यह पांचवी इकाई है। यह इकाई कृष्णा सोबती की कहानी 'सिक्का बदल गया' पर आधारित है। इ.स. 1948 में लिखी गई और 'बादल के घेरे' में संग्रहित इस कहानी में देश के विभाजन के कारण उत्पन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। विभाजन के कारण अपने परिवेश और देश से विस्थापित होने वाले इन्सानों के अन्तर्मन की भावनाओं, और वेदनाओं को इस कहानी में बखुबी अभिव्यक्त किया है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- सिक्का बदल गया कहानी में अभिव्यक्त विभाजन की त्रासदी और अपनी जमीन से उखडे लोगों के दर्द को समझ सकेंगे;
- देश विभाजन से टूटते मानवीय मूल्यों और संवेदहीनता के कारण भड़की सांप्रदायिकता और उसके परिणामों की विभिषिका से परिचित हो सकेंगे;
- विभाजन से इंसान-इंसान के बीच पैदा हुए अलगाव की यंत्रणा का विवेचन कर सकेंगे;
- अपनी जमीन और अपने लोगों से बिछुड़ने के दर्द को महसूस कर सकेंगे;
- 'सिक्का बदल गया ' कहानी पर लिखी इस इकाई में इन्हीं बिंदुओं को ध्यान में रखकर सामग्री प्रस्तुत की गई है। इसका ध्यान पूर्वक अध्ययन कीजिए।

26.1 प्रस्तावना

कृष्णा सोबती हिंदी की अत्यंत प्रतिष्ठित उपन्यासकार हैं। उपन्यासों के अतिरिक्त उन्होंने कुछ कहानियाँ व अपनी विशिष्ट शैली के संस्मरण भी रचे हैं। उनकी शायद ही काई ऐसी रचना हो जो हिंदी पाठक व समीक्षक समुदाय में खूब चर्चा का विषय न बनी हो। हाल के वर्षों में उनकी लंबी कहानी या उपन्यासिका 'ऐ लड़की' पर जितनी चर्चा पत्र-पत्रिकाओं में हुई, शायद ही किसी अन्य रचना पर हुई हो। इसी प्रकार उनका पिछले वर्षों में प्रकाशित उपन्यास 'दिलो-दानिश' भी अभी तक चर्चा के केंद्र में है।

1925 में विभाजन पूर्व पंजाब में जन्मी कृष्णा सोबती की शिक्षा दीक्षा लाहौर, शिमला व दिल्ली में हुई। कृष्णा सोबती का सृजनात्मक जीवन उनके काव्य लेखन से शुरू हुआ

था, अतः व उनके गद्य में भी उनका काव्यात्मक व्यक्तित्व झलकता है। उनके अब तक प्रकाशित उपन्यासों में 'मित्रो मरजानी', 'डार से बिछुड़ी', 'यारों के यार', 'तिन पहाड़', 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'जिंदगीनामा', 'दिलो दानिश' शामिल हैं। 'ऐ लड़की' पहले लंबी कहानी के रूप में प्रकाशित हुई, लेकिन पुस्तक रूप में उसे उपन्यास या उपन्यासिका कहा जा रहा है।

उपन्यासों के अतिरिक्त उनका एकमात्र कहानी संग्रह 'बादल के घेरे' भी खूब चर्चित है। 1980 में प्रथम प्रकाशित इस कहानी संग्रह में उनकी 24 कहानियाँ संकलित हैं, जिनमें 'सिक्का बदल गया' भी शामिल है। कहानियों के अतिरिक्त उनका रेखाचित्र या संस्मरण संग्रह 'हम हशमत' भी प्रकाशित है।

'डार से बिछुड़ी' व 'मित्रो मरजानी' के नाट्य रूपांतर अनेक बार मंचित होकर सफल रहे हैं। 'जिंदगीनामा' उपन्यास पर उन्हें 1980 का साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला व 1981 में उन्हें पंजाब सरकार का 'साहित्य शिरोमणि' पुरस्कार भी मिला। साहित्य अकादमी ने उन्हें अपना फेलो बनाया व दिल्ली व उत्तर प्रदेश सरकार के पुरस्कार कृष्णा सोबती ने लेखक के मान-सम्मान के प्रश्न पर ठुकरा भी दिए। मध्यप्रदेश का पुरस्कार उन्होंने स्वीकार किया है। 'जिंदगीनामा' व 'मित्रो मरजानी' के पंजाबी अनुवाद भी लोकप्रिय हुए हैं। कुछ अन्य भाषाओं में भी उनकी रचनाओं के अनुवाद हुए हैं। 'ऐ लड़की' का अंग्रेजी अनुवाद भी चर्चित हुआ है। उनकी रचनाओं पर देश-विदेश के अनेक विश्वविद्यालयों में शोध कार्य भी हो रहा है।

कृष्णा सोबती के लेखन की विशिष्टता उनके पंजाबी लोक-जीवन को चित्रित करने में हैं। जिनमें लेखिका का अपना पंजाबी व्यक्तित्व भी पूरी चित्रमयता में झलकता है। उनके लेखन में पंजाबी औरत के दिल का आन्तरिक चित्र बड़ी हार्दिकता से चित्रित किया गया है। पंजाबी औरत को कृष्णा सोबती ने उसके यथार्थ यानि हाड़ माँस से बने रूप में चित्रित किया है, उसका आदर्शीकरण करने का प्रयास नहीं किया है।

इस कहानी संग्रह की विचारणीय कहानी 'सिक्का बदल गया' जुलाई 1948 में रची गई। कृष्णा सोबती ने इस कहानी में सन् 1947 में घटी देश विभाजन की ऐतिहासिक, लेकिन मानवीय स्तर पर अत्यंत हृदय विदारक घटना को आधार बनाया है। विभाजन के राजनीतिक, सामाजिक पहलुओं से हट कर उसके अत्यंत मार्मिक मानवीय पहलुओं को कहानी में वाणी दी गई है। विभाजन में अपना देश, घर, बार छोड़ने की पीड़ा को लेखिका ने कहानी के केंद्र में रखा है, जिस पर हम इकाई के अगले हिस्सों में विचार करेंगे।

26.2 सिक्का बदल गया : कथा और कथ्य

जुलाई 1948 में रची कृष्णा सोबती की कहानी 'सिक्का बदल गया' अत्यन्त मार्मिक कहानी है, जिसमें 1947 के देश-विभाजन की मानवीय पीड़ा का गहराई से अंकन हुआ है।

अविभाजित कश्मीर के निकट चनाब नदी के किनारे बसे गाँव की अकेली बड़ी हवेली में 65-70 वर्ष आयु की शाहनी अकेली रहती हैं। उनके पति शाह जी का देहांत हो चुका है, पढ़ा लिखा बेटा कहीं बाहर रहता है। उसके सैंकड़ों कारिंदे हैं, मीलों तक फैले दूर

दराज के गाँवों तक उसके खेत हैं। यह 1947 के विभाजन का दौर है - लूटपाट, आगज़नी, हत्याओं और शरणार्थी बन कर अपनी धरती छोड़कर परायी धरती की ओर जाने का।

कहानी की शुरूआत पौ फटने पर शाहनी के दरिया किनारे आकर नहाने से होता है, जहाँ वह पिछले पचास वर्षों से नहाती आ रही है। एक दिन वह इसी दरिया के किनारे दुल्हन बन कर आई थी। इन दिनों माहौल में तनाव फैला है। शाहनी शेरे और हुसैना को बुलाती है। शेरे की माँ के मरने के बाद शाहनी ने ही उसे पाल पोस कर बड़ा किया है। लेकिन इन दिनों शेरा तीस चालीस हत्याएँ कर चुका है और दंगाइयों में वह भी शामिल है। हवेली की दौलत पर उसकी भी नज़र है। शाहनी को खबर है कि रात में कुल्लूवाल (पड़ोसी गाँव) के लोग आए थे। शाहनी शेरे से कहती है कि 'आज शाह जी होते तो कुछ बीच बचाव करते' - लेकिन शेरा ऐसा नहीं सोचता, उसे लगता है - 'आज शाह जी क्या, कोई भी कुछ नहीं कर सकता। यह होके रहेगा - क्यों न हो? हमारे ही भाई-बहनों से सूद ले-लेकर शाह जी सोते की बोटियाँ तोला करते थे। प्रतिहिंसा की आग शेरे की आँखों में उतर आई।'

लेकिन शेरा शाहनी से कैसे प्रतिहिंसा जताए, जिसने उसे बेटे की तरह पाला है (वह शाहनी को सावधान भी करना चाहता हे, लेकिन कैसे करे। पास के जलालपुर गाँव में आग लगी है, शेरे को इसकी पूर्व सूचना थी। शाहनी के नाते-रिश्ते सब वहीं थे।)

शाहनी हवेली लौटती है तो ट्रक आने की चर्चा सुनती है। गाँव वाले शाहनी की हवेली पर इकट्ठे होने लगते हैं। शाहनी को भी लगता है कि वक्त आ गया है। शाहनी की असामियाँ वहाँ हैं, जिन्हें उसने कभी नाते-रिश्तों से कम नहीं समझा। शाहनी को दंगाइयों की योजनाओं की जानकारी थी उसकी हवेली को लूट लेने की योजना की भी, लेकिन शाहनी जान कर भी अनजान बनी रहती है। उसने कभी किसी से बैर नहीं किया।

थानेदार दाऊद खाँ शाहनी को लेने आया है। यह वही शाहनी है, जिसने उसकी मंगेतर के लिए सोने के कनफूल मुँह दिखाई में दिए थे। जो उससे मसीत के लिए भी तीन सौ रुपए चंदा ले गया था। वह शाहनी को कुछ सोना-चाँदी-नगदी साथ लेने का सुझाव देता है, जिसे शाहनी ठुकरा देती है।

शेरा कहता है कि देर हो रही है। शाहनी आहत हो उठती है "देर - मेरे घर में मुझे देर!" आँसुओं की भंवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा। "मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए.......... नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है - देर हो रही है।"

शाहनी अपने पुरखों के घर से रोकर नहीं, मान और शान से निकलेगी। उसके ड्योढ़ी से बाहर आते ही बड़ी-बूढ़ियाँ रो उठती हैं। शाहनी हवेली को अंतिम बार देख दोनों हाथ जोड़ सिर झुका देती है। ड्योढ़ी के आगे कुलवधू की आँखों से निकल कर कुछ बूँदे चू जाती हैं। खाली हाथ निकलती है शाहनी। सोना-चाँदी-नगदी-दौलत-हवेली में ही रहेगी। खूनी शेरे का दिल टूटता है। इस्माइल आसीस माँगता है और शाहनी की आसीस है "रब्ब तुम्हें सलामत रखे बच्चा, खुशियाँ बख्शे....... ."

दाऊद खाँ कहता है ''शाहनी, मन में मैल न लाना। कुछ कर सकते तो उठा न रखते। वक्त ही ऐसा है। राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है........''

कैंप में पहुँच आहत मन से शाहनी सोचती है ''राज पलट गया.......... सिक्का क्या बदलेगा? वह तो मैं वहीं छोड़ आई!''

कहानी समाप्त होती है तीन अर्थपूर्ण वाक्यों से। और शाह जी की शाहनी की आँखें और भी गीली हो गई।

आसपास के हरे-हरे खेतों से घिरे गाँवों में रात खून बरसा रही थी। शायद राज पलटा खा रहा था और - सिक्का बदल रहा था..........।

शाहनी की इस झकझोर देने वाली पीड़ा से विभाजन के मर्मान्तक दर्द को व्यक्त करने वाली कहानी यहीं समाप्त होती है।

कृष्णा सोबती की यह कहानी पचास वर्ष से अधिक पुराने विभाजन के दर्द को व्यक्त करने वाली कहानी है। इन पचास वर्षों में कृष्णा सोबती ने अत्यंत महत्वपूर्ण लेखन किया है, लेकिन लगता है कि उनकी बहुत पहले की रचनाएँ भी अत्यंत परिपक्व हैं। कृष्णा सोबती ने यह कहानी करीब 23 वर्ष की आयु में लिखी। ' बादलों के घेरे' संग्रह में केवल उनकी दो और कहानियाँ ऐसी हैं, जो इस कहानी से पहले लिखी गई हैं। संभवतः 'नफीसा' उनकी सर्वप्रथम रचना है, जो जनवरी 1944 में अर्थात् 19 वर्ष की आयु में लिखी गई है और 'लामा' वर्ष बाद रची गई। 'सिक्का बदल गया' आश्चर्यजनक रूप से प्रौढ़ कहानी है। अपनी रचना के पचास वर्ष बाद भी इस कहानी का महत्व निर्विवाद है व अंशतः कहानी के कथा कौशल और इसकी प्रभाविकता से और अंशतः इसके महत्वपूर्ण कथ्य के कारण। देश-विभाजन की मानवीय पीड़ा को ही लेखिका ने कहानी का कथ्य बनाया है, जो अपनी समसामयिकता के कारण ही नहीं, वरन् गहन मानवीय मूल्यों के कारण भी प्रभावशाली बन कर प्रस्तुत हुआ है।

'सिक्का बदल गया' अपनी कथा और कथा वस्तु के कारण तो सफल कहानी बनी ही है जिसमें कथा संयोजन की विभिन्न युक्तियों की भूमिका है, जैसे कथा के विवरण में परिवेश का अत्यंत सूक्ष्म व मर्मस्पर्शी अंकन, कथा के गठन में कसाव आदि। कहानी में कथारस पर जोर न देकर लेखिका ने वस्तु पक्ष को प्रभावी बनाया है।

26.3 देश विभाजन और मानवीय संबंधों की कहानी

'सिक्का बदल गया' का कथ्य क्या है? लेखिका इतनी मार्मिक स्थितियाँ अंकित कर कहना क्या चाहती है? वास्तव में 'सिक्का बदल गया' की कथा में कहानी का कथ्य भी अन्तर्निहित है।

विभाजन भारतीय समाज के जीवन में भयानक विस्फोट के रूप में प्रकट हुआ जिसके कारण आर्थिक समस्याएँ ही सामने नहीं आयी वरन् राष्ट्रीय जीवन की आत्मा भी झुलस गई। सदियों से अर्जित भाषा, मानवीय संबंध, मानवता के आदर्श, मानव मूल्य और मानव जाति का विवेक साम्प्रदायिकता का आघात सह न सके। राजनैतिक अस्त/व्यस्तता ने उखड़े हुए वर्ग को भयाक्रांत तो किया ही उसकी परम्परा और उसका सामाजिक

ढाँचा, संबंधों की आस्था और परिवार की नींव को भी हिलाकर रख दिया। यह दुर्घटना केवल राजनीतिक या किसी वर्ग विशेष से ही जुड़ी नहीं रही बल्कि इससे लाखों-करोड़ों लोगों की जिंदगी उनका वर्तमान और भविष्य, उनकी सभ्यता और संस्कृति उनका आचरण और व्यवहार भी जुड़ा हुआ था।

इसमें संदेह नहीं कि हिंदू और मुसलमान सदियों तक एक ही स्थान पर एक साथ रहने के कारण ही एक ही एक धरती और संस्कृति से भावनात्मक स्तर पर जुड़े हुए थे। पाकिस्तान के निर्माण के पक्षधर यह भलीभांति जानते थे कि पाकिस्तान बनने के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा हिंदू मुसलमानों का सांझा जातीय-सांस्कृतिक संस्कार है। वे इस संस्कार को कमजोर करके नष्ट कर देना चाहते थे। इस वर्ग में हिंदू और मुसलमान दोनों ही संप्रदायों के लोग थे। इसी मानवीय करुणा का मूल केन्द्रीय स्वर विभाजन की पीड़ा झेलने वाले पात्रों की कहानियों में मुखरित है और यह मानवीय करुणा भीषण नरसंहार में भी अनेक अर्थच्छवियों में अपनी शाश्वतता को चरितार्थ करती है।

कहानी विभाजन की उस प्रक्रिया को भी उजागर करती है, जिसमें सरकार का यह प्रयत्न था कि मुस्लिम बहुल देश में फंसे हुए हिंदुओं को कैंपों तक सुरक्षित लाने के लिए ट्रकों का प्रबंध किया जाए।

विवेच्य कहानी में विभाजन के दिनों की लोगों की मानसिकता का भी उद्घाटन किया गया है। मुस्लिम बहुल प्रदेश होने के कारण शाहनी का भीतर ही भीतर डरना, दंगाइयों के आवागमन के संकेत मिलते ही सहम जाना और पड़ोसी गाँव को आग में जलते हुए देखकर अवाक् रह जाना, इस बात के प्रमाण हैं। बहुसंख्यक संप्रदाय का शेरा, जिस पर शाहनी के असंख्य उपकार हैं, जिसका उसने बेटे के समान पालन-पोषण किया है, भी परिवर्तित परिस्थितियों में अन्य लोगों के परामर्श पर शाहनी की हत्या करने और उसके सामान को बाँटने की बात सोचता है और एक सीमा तक निर्णय भी कर लेता है।

विभाजन की नृशंस हत्याओं और दिल दहलाने वाली घटनाओं के बावजूद मानवता पूर्णतया समाप्त नहीं हुई थी। विवेच्य कहानी इस स्थिति की ओर भी संकेत करती है। शाहनी सदा के लिए गाँव छोड़कर जा रही है, क्योंकि राज्य पलट गया है, यह देखकर विदाई लेती है। शेरा, जो शाहनी की हत्या की योजना में शामिल था, वही शाहनी को कैंप ले जाने के लिए आए ट्रक तक छोड़ते वक्त उसकी आँखें नम हो आई थी।

'सिक्का बदल गया' के शाहजी, जो देहांत के कारण अनुपस्थित हैं, पृष्ठभूमि की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के कारण कहानी में सर्वत्र मौजूद हैं। उन्होंने गाँव के चारों ओर मीलों फैली धरती को अपनी जायदाद बना लिया है। ये ज़मीनें किस तरह शाह जी की बनी, इसके कुछ संकेत कहानी के भीतर से मिलते हैं। शेरे के शब्दों में शाह जी उनके भाई-बन्दों से सूद ले-लेकर इतने अमीर बने हैं। लेकिन इस अमीरी के बावजूद उनके संबंध शोषक-शोषित की सामान्य परिभाषा में नहीं आते। शाहनी के अनुसार उसने अपने कारिन्दों को रिश्ते-नातेदारों की तरह रखा है। शेरे को जिस तरह शाहनी ने पाला उसमें भी उस दौर की मानवीयता का गहरा स्पर्श दिखाई देता है। यही वजह है कि शेरे के मन में शाह जी के प्रति प्रतिहिंसा का भाव होकर भी शाहनी के बारे में हिंसा की बात सोचना उसे विचलित कर देता है। शेरा और उसकी पत्नी हुसैना शाहनी के कारिन्दे ही हैं, लेकिन शेरा विभाजन के दौर की लूटपाट व हत्याकांडों में भी शामिल है। तीस-चालीस हत्याएँ वह कर भी चुका है। लेकिन शाहनी के ऊपर हाथ उठाना उसके लिए मुश्किल है। हालाँकि एक रात पहले ही शाहनी की संपत्ति लूटने की योजनाएँ वे बना

चुके थे। शाहनी जब ट्रक पर सवार होकर शरणार्थी बन कर चलने के लिए तैयार होती है तो शेरे की आँखें भर आती हैं।

वास्तव में एक मानवीयता की भावना, जिसमें कुछ हद तक सामंती तत्व भी शामिल है, को प्रस्तुत करना ही 'सिक्का बदल गया' का मूल कथ्य है। इस मानवीयता को शाहनी के उदात्त चरित्र द्वारा तब और भव्य रूप प्राप्त हो जाता है जब वह हवेली से सोना-चाँदी या नगदी कुछ भी लेने से मना कर देती है। निरपेक्ष भाव से कह देती है कि बच्चा ये तुम लोगों का है। हवेली और ज़मीनों से लगाव उसे अब भी है, लेकिन स्थिति की गंभीरता को समझ कर उनसे निरपेक्ष होना भी शाहनी ने सीख लिया है।

कृष्णा सोबती की विश्व-दृष्टि में गहरी व उदार मानवीयता है, इसीलिए वे मानवीय संबंधों को सहानुभूति के साथ प्रस्तुत करती हैं। वास्तव में 1947 का देश-विभाजन भले ही अचानक घटित होने वाली घटना न हो, फिर भी सुदूर गाँवों तक तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं या षडयंत्रों की रोज़-ब-रोज़ खबर न थी। वे दिन ऐसे मीडिया केंद्रित दिन भी नहीं थे, जिसमें पूरी दुनिया सचमुच के ग्लोब आकार (टी.वी. का पर्दा) में सिमट जाए। इसलिए विभाजन और विभाजन की स्थिति से पैदा आगजनी, लूटपाट, दंगे, हत्याओं आदि की भयानक घटनाएँ ग्रामीण पंजाब की शांत जिंदगी में भयंकर खलल डालने वाली घटनाएँ थीं। इस स्थिति को 'कंट्रास्ट' के रूप में लेखिका ने अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। एक ओर शाहनी पिछले 50 वर्ष से इतनी शांत, चैनयुक्त टिकी हुई दुनिया में रोज, दरिया में नहाती आ रही है और दूसरी ओर अचानक 50 वर्ष की शांत टिकी जिंदगी की गति में भयंकर अवरोध आ जाता है। इस स्थिति से गाँव के लोग अभी पूरी तरह अवगत भी नहीं है, उनकी मनःस्थिति उसका पूरा प्रभाव ग्रहण कर पा सकने की स्थिति में भी नहीं आ पाई है। नवाब बीबी के शब्दों में "शाहनी, आज तक कभी ऐसा न हुआ, न कभी सुना। गज़ब हो गया, अंधेर पड़ गया।"

देश-विभाजन की घटना देश के साधारण नागरिकों, विशेषतः पंजाब व बंगाल की जनता के लिए, वह हिंदू हो या मुसलमान या सिख, के लिए एक आश्चर्यजनक व अंधेर पड़ने जैसी घटना ही थी, भले ही राजनीति के खिलाड़ियों के लिए वह घटना 'स्वतंत्रता' और 'आज़ादी' और नए 'पाक मुल्क' के सृजन के साथ कितनी ही स्वागत योग्य रही हो।

कृष्णा सोबती ने अपनी इस छोटी सी, लेकिन मार्मिक कहानी में देश-विभाजन का पंजाब की साधारण ग्रामीण जनता पर पड़ने वाले प्रभाव को 'सिक्का बदल गया है' का कथ्य बनाया है। इस कथ्य को प्रस्तुत करने में उन्हें पर्याप्त सफलता मिली है।

26.4 विभाजन की त्रासदी का अमानवीय अनुभव

विभाजन भौगोलिक सीमाओं का ही विभाजन नहीं था वह तो समस्त मानवीय मूल्यों, आशाओं, आकांक्षाओं एवं अपनी जड़ों से उखड़ने की त्रासदायक पीड़ा का भी अनुभव था। 'सिक्का बदल गया' कहानी में अपनी जमीन, हवेली सब कुछ छोड़कर शाहनी को जाना पड़ता है। बूढ़ी शाहनी, जिसने सभी को प्यार दिया, ममता दी, दंगे-फसाद और प्रतिहिंसा की शिकार बन जाती है। सांप्रदायिक चेतना के भीतर विलुप्त एकता को तलाशती, उसकी पीड़ा को भोगती मानसिकता की करुण गाथा इस कहानी में चित्रित हुई है।

अपनी जमीन से उखड़ने की उसकी पीड़ा इतनी गहरी है कि उसके आगे उसे राज्य पलटने का महत्व है, न सिक्का बदलने का, सारी पीड़ा है अपनों के बीच पराया बन जाने की। शाहनी के लिए बँटवारे के कारण हुकूमत के बदल जाने का, सिक्का बदल जाने का अर्थ नहीं है। उसे तो मानवीय मूल्यों के सिक्के बदल जाने तथा संबंधों के निरर्थक बना दिए जाने का दुख है। यही उसकी अंतर्वेदना है।

विभाजन के अनगिनत लोगों के जीवन को भावात्मक, विचारात्मक और मनोवैज्ञानिक धरातल पर हिला के रख दिया। देश विभाजन से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं में प्रमुख थी आवास की समस्या। स्त्रियों के अपहरण और बलात्कार की अमानुषिक घटनाओं से संपूर्ण स्त्री जाति के भयंकर असुरक्षितता, अपमानबोध और अत्याचार से गुजरने की त्रासदी। स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में इन सभी पीड़ा, घुटन, असंवेदनशीलता, नैतिक मूल्य-मान्यताओं के टूटने के दंश, मानवीय मूल्यों के ध्वंस होने को अभिव्यक्ति हुई है। देश विभाजन की त्रासदी बहुत ही भीषण थी। आदमी की आदमी के प्रति क्रूरता चरम सीमा तक पहुँच चुकी थी। स्वातंत्र्योत्तर रचनाकारों ने इस पाशविशकता को रचनाओं के मार्फत अभिव्यक्त किया। बहुत से कहानीकारों ने तो सुना ही नहीं है, भोगा भी है।

विभाजन की विभीषिका ने स्वतंत्रता पूर्व के देश की प्रतिमा या को खंडित कर दिया। राजेन्द्र यादव ने इस बारे में कहा है कि 'पाकिस्तान में अगर ईट-चूने के मकान, जमीनों का ध्वंस हुआ तो इधर सारी मर्यादाएँ, नैतिक मान्यताएँ, अच्छे-बुरे की बड़ी-बड़ी इमारतें गिरने लगीं।' सांप्रदायिकता की भीषणता ने मानवता की सभी दीवारें ढहा दी थी। विभाजन ने इंसान को आंतरिक और बाह्य रूप से ध्वस्त कर दिया था। विभाजन की त्रासदी स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में ऊपरी सतह की घटनाओं को ही नहीं बल्कि मानवी मन में घटित उथल-पुथल, टूटन, निराशा, विवशता और पीड़ा को अभिव्यक्ति करती है। विभाजन जैसी राजनीतिक-स्वार्थपरता का यथार्थ चित्रण इस समय की कहानियों ने किया है। कृष्णा सोबती की 'सिक्का बदल गया' देश के विभाजन की पृष्ठभूमि में नाते-रिश्तों के यकायक बदल जाने और झूठे पड़ जाने की पीड़ा की संवेदनशील कहानी है।

भारत विभाजन की माँग तो 1933 में ही मुस्लिम लीग ने कर दी थी, लेकिन 1945 के बाद देश का विभाजन लगभग निश्चित ही माना जा रहा था और 1946 तक आते-आते परिस्थितियाँ और ज्यादा खराब हो चुकी थी। इस दौर में बंगला, हिंदी, पंजाबी, गुजराती, सिंधी, उर्दू आदि भाषाओं में इन परिस्थितियों की अभिव्यक्ति भी होने लगी थी।

'सिक्का बदल गया है' कहानी 1948 में रची गई। विभाजन पर 1947 से शुरू होने वाला साहित्य आज भी जारी है। कुछ महत्वपूर्ण रचनाएँ 1955-60 के बीच, और 1970-75 के बीच भी लिखी गई। 'झूठा सच' उपन्यास 1950 और 1960 में छपा, 'तमस' 1973 में, 1947-50 के बीच रामानंद सागर का 'और इंसान मर गया' और शमशेर सिंह नरुला का 'एक पंखुड़ी की तेज़ धार' आदि उपन्यास भी छपे। हिंदी, पंजाबी, उर्दू, अंग्रेजी, बंगला, गुजराती, सिंधी आदि में इसी बीच सैंकड़ों कहानियाँ भी प्रकाशित हुई। पंजाबी में महिंदर सिंह सरना जैसे लेखकों के पास अभी भी विभाजन संबंधी कहानियों का अकूत भंडार है और उनकी अधिकांश कहानियाँ अभी भी विभाजन की स्थिति को ही चित्रित कर रही है।

विभाजन संबंधी अनेक भाषाओं में रचे अधिकांश कथा-साहित्य में मानवीय पीड़ा ही बार-बार चित्रित हुई है। इसलिए अधिकांश रचनाओं में कई बार दोहराव की स्थिति भी लग

सकती है। मानवीय स्थितियों के भी सभी लेखकों के यहाँ मिलते जुलते पहलू हैं। इनमें सर्वाधिक चित्रित स्थिति है - सदियों से चले आ रहे हिंदू-सिख-मुस्लिम सद्भाव में भयानक खलल, विभाजन की योजना घोषित होते ही तीनों संप्रदायों के बीच सांप्रदायिक दंगे शुरू हो जाते हैं। ये दंगे छिटपुट रूप में पहले भी होते रहे हैं। मार्च 1947 में रावलपिंडी और उसके आसपास के गाँवों में ये दंगे बड़े पैमाने पर शुरू हुए, जिन्हें आधार बना कर भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास की रचना की।

विभाजन संबंधी साहित्य में दूसरी मानवीय पीड़ा की स्थिति है - विस्थापन, भटकन और शरणार्थी बन कर जीने के लिए संघर्ष की स्थिति। बंगला, सिंधी, गुजराती आदि भाषाओं के साहित्य में यह स्थिति ज़्यादा विस्तार से अंकित हुई है, क्योंकि उन क्षेत्रों में हिंसा कम हुई, विस्थापन द्वारा शरणार्थी बनने की स्थिति अधिक पैदा हुई। जबकि पंजाबी, उर्दू, हिंदी में दोनों ही स्थितियाँ हिंसा और विस्थापन बड़े पैमाने पर घटी हैं। पंजाब क्षेत्र की हिंसा में पाँच-छह लाख निर्दोष लोग धार्मिक कटुता में एक दूसरे के हाथों मारे गए। इससे अधिक स्त्रियाँ अपमानित हुई। करीब एक करोड़ लोग अपने घरों - जमीनों से विस्थापित होकर शरणार्थी बनने पर विवश हुए। करीब एक साल से कुछ अधिक समय तक ये स्थितियाँ चलीं। शरणार्थी कैंप और उनके साथ जुड़ा जीवन-संघर्ष तो और भी कई साल लंबा खिंचा।

विभाजन-प्रभावित साहित्य में तीसरी मानवीय स्थिति है - हिंसा और विस्थापन के प्रभाव से पैदा हुई मानवीय अलगाव की मनःविकृतियाँ। इस स्थिति का चित्रण साहित्य में हुआ तो है, लेकिन उतनी गहराई और विस्तार में नहीं जितनी गहराई और विस्तार की ऐसे साहित्य में अपेक्षा थी। वैसे उर्दू का 'उदास नस्लें' जैसे उपन्यास विभाजन के दुःखद प्रभाव के इस रूप को भी साहित्य में अंकित करने में सफल रहे हैं।

26.5 साम्प्रदायिकता की विभीषिका

सांप्रदायिक दंगों में सांप्रदायिक आधार पर परस्पर हत्याओं के अतिरिक्त लूटपाट, आगजनी, धार्मिक आधार पर हिंसा, जबरदस्ती धर्म परिवर्तन, स्त्रियों के साथ बलात्कार और व्यापक हत्याएँ आदि। शामिल हैं। विभाजन संबंधी अधिकांश कथा-साहित्य, विशेषतः पंजाबी, हिंदी, उर्दू व अंग्रेजी में इस प्रकार की घटनाएँ अधिक व्यापक रूप में चित्रित हुई हैं।

कृष्णा सोबती की अपेक्षाकृत छोटी कहानी 'सिक्का बदल गया है' में विभाजन के दुष्प्रभावों के सभी रूपों को किसी-न-किसी स्तर पर देखा जा सकता है।

'सिक्का बदल गया है' कहानी का आरंभिक पैराग्राफ जीवन के सामान्य रूप को चित्रित करता है, जिसमें शाहनी पौ फटते ही दरिया पर नहाने जाती है। लेकिन दूसरे पैरा में ही विभाजन के प्रभाव की परछाई नज़र आने लगती है, जब शाहनी 'रेत में अगणित पाँवों के निशान' देखकर 'सहम-सी' जाती है। शाहनी का यह सहमना वातावरण में पिछले कुछ समय से आ रहे त्रासजनक परिवर्तन को इंगित करता है।

शाहनी को आज इस प्रभात की मीठी नीरवता में 'कुछ भयावना सा लग रहा है' उनका 'चक्की वाला' कुआं भी आज नहीं चल रहा। शाहनी जब अपने खास कारिंदे शेरे और उसकी बीवी हुसैना को आवाज़ देती है तो उसकी प्रतिक्रिया विभाजन के दिनों की

त्रासदी को और अधिक उज़ागर कर देती है। शाहनी ने शेरा को उसकी माँ जैना के मरने के बाद पाल पोसकर बड़ा किया है, लेकिन इस समय उसके पास गंड़ासा हे, जो वह शाहनी की आवाज़ सुन छिपा देता है। 'वह सोच रहा था कि उस शाहनी की ऊँची हवेली की अंधेरी कोठरी में पड़ी सोने-चाँदी की संदूकचियाँ उठाकर......'

शाहनी को मालूम है कि कल रात गाँव में पड़ोसी गाँव कुल्लूवाल के लोग आए थे और कुछ लूटपाट की योजना बनाकर गए थे। शेरा भी उनकी मीटिंग में शामिल था, वह इस माहौल में तीस-चालीस हत्याएँ कर चुका है। 1947 के माहौल में कोई आदमी कितने इंसानों की हत्या कर सकता था, इसका कोई हिसाब न था, न इसके लिए अपनी ज़मीर से कोई कोंच होती थी। राज्य की व्यवस्था में भी इन जघन्य अपराधों के लिए कोई रोक नहीं थी। और यह सब धर्म के नाम पर ज़ायज़ ठहराया जाता था।

लेकिन इससे भी त्रासद पक्ष है, शेरे का शाहनी की दौलत पर हाथ साफ करने की सोचना। हालाँकि उसका सामना वह नहीं कर सकता, लेकिन दिमाग में ऐसे विचार आना भी उस समय के सामाजिक वातावरण के कलुषित होने की दशा को दर्शाते हैं। शेरे के मस्तिष्क में शाह परिवार के प्रति हिंसा की आग पैदा होने का कुछ आधार लेखिका ने संकेतित किया है। शाह परिवार द्वारा इस क्षेत्र के गरीब मुसलमानों का आर्थिक शोषण, यद्यपि यह आर्थिक शोषण बहुत स्पष्ट रूप से चित्रित नहीं किया है, शेरे जैसे गरीब कारिन्दों के मन में प्रतिहिंसा का भाव जगाता है। यह प्रतिहिंसा उन दिनों की परिस्थितियों में धार्मिक कट्टरता के रूप में स्वाभाविक थी।

शेरे के मन में यह प्रतिहिंसा आर्थिक कारणों से है, लेकिन मानवीय व्यवहार भी उतनी ही बड़ी सच्चाई है। शाहनी के ममता भरे हाथ कैसे उसे बचपन में दूध पिलाते थे, यह याद आता है तो शेरा विचलित हो जाता है। 'कल रात वाला मशवरा', है जिसमें शाहनी के सामान बाँट की योजना से लेकर उसकी हत्या की योजना है। इससे विचलित होकर वह शाहनी को बचाना चाहता है। उसे घर छोड़ने उसके साथ चलता है और अंत में अन्तर्द्वंद्व! साथी शाहनी को मारना चाहते हैं, वह शाहनी को सावधान करना चाहता है, लेकिन 'कैसे कहे?'

विभाजन के दिनों में या हाल में पंजाब के आतंकवाद के दिनों में हिंसा को अपना कर भी, यह अंतर्द्वंद्व बना रहता है कि अपने परिचितों को कैसे मारे, कैसे उन्हें लूटे। विभाजन के आतंक या हाल के आतंकवाद में अपनी ज़मीर को बस इतना सा बचाने के लिए - दंगाइयों व हिंसा में लिप्त व्यक्तियों ने सिर्फ अपने गाँव, मुहल्ले या कस्बे को तो बख्श दिया और दूसरे गाँव कस्बे या मुहल्ले में बिना किसी ज़मीर के जम कर हिंसा की। शेरा भी तीस-चालीस हत्याएँ कर चुका है। शाहनी की दौलत पर भी उसका मन ललचा चुका है, लेकिन एक डोर शाहनी से अभी भी बँधी है, जो उसे उसकी हत्या करने से रोके हुए है।

शाहनी के साथ चलते हुए और शाहनी के प्रति कुछ सहानुभूति रखते हुए भी शेरे को शाहनी के नाते-रिश्तेदारों की कोई चिंता नहीं है। क्योंकि उनके साथ उसका कोई मानवीय संबंध नहीं है। शेरे को मालूम है कि आज पड़ोसी जबलपुर गाँव में आग लगनी थी, सो लग गई, आसमान धुएँ से भर गया है। शाहनी के 'नाते-रिश्ते सब वहीं हैं।'

शाहनी हवेली पहुँचती है। उसका मन शून्य में है, शेरा लौट जाता है। शाहनी लेटती है तो उठ नहीं पाती, हवेली खुली है, और शाहनी को लगता है कि आज उसका अधिकार

उससे छूट रहा है। आज उस हवेली से मोह नहीं हो रहा। तभी रसूली से उसे लेने आए ट्रक की खबर मिलती है। सारे गाँव में खबर फैल जाती है, गाँव इकट्ठा हो जाता है, गाँव के जो आसामी उसके लिए नाते-रिश्तों से कम नहीं थे, आज कोई उसका नहीं, वह निपट अकेली है।

हवेली आ गयी। शाहनी ने शून्य मन से ड्योढ़ी में कदम रखा। शेरा कब लौट गया उसे कुछ पता नहीं, दुर्बल-सी देह और अकेली, बिना किसी सहारे के न जाने कब तक वहीं पड़ी रही शाहनी। दुपहर आयी और चली गयी हवेली खुली पड़ी है। आज शाहनी नहीं उठ पा रही है। जैसे उसका अधिकार आज स्वयं ही उससे छूट रहा है। शाहजी के घर की मालकिन.... लेकिन नहीं, आज मोह नहीं हट रहा है मानो पत्थर हो गयी हो। पड़े-पड़े शाम हो गयी, पर उठने की बात फिर भी नहीं सोच पा रही। अचानक रसूली की आवाज सुनकर चौंक उठी।

रसूली, लाह बीबी, बेगू पटवारी, मुल्ला इस्माइल, ये सब शाहनी के खैरख्वाह हैं, लेकिन वे सोचते हैं कि कोई क्या कर सकता है - 'सिक्का बदल गया है' थानेदार दाऊद खां शाहनी को लेने आया है, दूसरे शब्दों में उसकी जान बचाने, मगर साथ ही विस्थापित करने, उसे शाहनी से शरणार्थी बनाने आया है। इन सब पर शाहनी और शाह जी के कुछ-न-कुछ एहसान हैं। ये लोग शाहनी की मदद कर कुछ एहसान चुकाना भी चाहते हैं, लेकिन शाहनी उजड़ने में भी अपनी शान बरकरार रखना चाहती है। उसने जीवन भर दिया ही दिया है, अब वह अपना घर बार, ज़मीन-ज़ायदाद, दौलत भी ऐसे छोड़ कर जा रही है जिसमें उसकी शान है। अपने ही घर का सोना-चाँदी-नगदी लेना उसे अब गवारा नहीं, क्योंकि अपनी ही चीज़ लेने के लिए उसे दूसरों का एहसानमंद होना पड़ेगा और शाहनी एहसान करना जानती है, एहसान लेना नहीं। इसलिए वह दाऊद खाँ थानेदार का सोना-चाँदी-नगदी साथ लेने का सुझाव ठुकरा देती है।

''शाहनी!'' दाऊद खाँ ने आवाज दी। वह थानेदार है, नहीं तो उसका स्वर शायद आँखों में उतर आता।

शाहनी गुमसुम, कुछ न बोल पायी।

''शाहनी!'' ड्योढ़ी के निकट जाकर बोला, ''देर हो रही है शाहनी (धीरे से) कुछ रखना हो तो रख लो। कुछ साथ बाँध लिया है? सोना-चाँदी.....'' शाहनी अस्फुट स्वर में बोली, ''सोना-चाँदी!'' जरा ठहरकर सादगी से कहा, ''सोना-चाँदी बच्चा, वह सब कुछ तुम लोगों के लिए है। मेरा सोना तो एक-एक जमीन में बिछा है।''

गहरी वेदना और तिरस्कार से भर उठी है शाहनी। शेरे को डर है कि शाहनी दाऊद खां को ही हवेली से कुछ दे दिला न दे। इसलिए वह देर होने की बात कहता है, जो शाहनी के लिए और भी मर्मान्तक है। जिस घर में वह पचास वर्ष रही, उस घर से घंटे भर में ही निकल जाने के लिए विवश और ऊपर से 'अपनों' द्वारा ही देरी की चेतावनी!

शाहनी चौंक पड़ी। देर....मेरे घर में मुझे देर ! आँसुओं की भँवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए....नहीं, यह सब कुछ नहीं, ठीक है.....देर हो रही है। शाहनी के जैसे कानों में यही गूँज रहा है - देर हो रही है....पर नहीं, रो-रोकर नहीं शान से निकलेगी इस पुरखों के

घर से। मान से लाँघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन बहू रानी बनकर आ खड़ी हुई थी।

बड़ी हवेली जैसे उसकी अपनी है। शाहनी हवेली की देहरी से उसी शान और मान से बाहर निकलती है, जिस शान और मान से पचास वर्ष पहले दाखिल हुई थी। हवेली के प्रति सम्मान और ममता में आँखों से कुछ बूँदे चू जाती हैं।

शाहनी ने दुपट्टे से सिर ढाँपकर धुँधली आँखों से हवेली को अंतिम बार देखा। उसने दोनों हाथ जोड़ लिये - यही अंतिम दर्शन था, अंतिम प्रमाण था। शाहनी ने जोर मारा.....सोचा, एक बार घूम-फिरकर पूरा घर क्यों न देख आऊँ मैं? जी छोटा हो रहा है, पर जिनके सामने हमेशा बड़ी बनी रही है उनके सामने वह छोटी न होगी। इतना ही ठीक है। बस हो चुका। सिर झुकाया। ड्योढ़ी के आगे कुल-वधु की आंखों से निकलकर कुछ बूंदें चू पड़ी। शाहनी चल दी - ऊँचा भवन पीछे खड़ा रह गया। दाऊद खाँ, शेरा, पटवारी, जैलदार और छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े, मर्द-औरतें सब पीछे-पीछे।

शाहनी की इस शान से 'खूनी शेरे का दिल भी टूट रहा है।' दाऊद खां ने आगे बढ़कर ट्रक का दरवाजा खोला। शाहनी बढ़ी। इस्माइल ने आगे बढ़कर भारी आवाज़ से कहा, *"शाहनी, कुछ कह जाओ, तुम्हारे मुँह से निकली असीस झूठ नहीं हो सकती।"* और शाहनी उसका किरदार जानते हुए भी उसे 'तुम्हें भाग लगे चन्ना।' की आसीस देकर ही गाँव से विदा होती है।

शाहनी की आँखें और गीली हो गयी। आसपास के हरे भरे खेतों में रात खून बरसा रही थी।

कृष्णा सोबती ने कुल साढ़े छः पृष्ठों में 1947 के देश-विभाजन के परिवेश की मानवीय पीड़ा को इतने सघन रूप में प्रस्तुत किया है कि कहानी रचना के पचास वर्ष बाद भी (विशेषतः जब दोनों देशों में पचासवीं जयंती के जश्न मनाए जा रहे हैं) 'सिक्का बदल गया है' पुराने दिनों का चित्र आँखों के सामने इतने मार्मिक ढंग से प्रस्तुत करती है कि आजादी की व्यर्थता का बोध होने लगता है और विभाजन का दर्द एक बार फिर पूरी शिद्दत से उभर कर सामने आने लगता है।

'सिक्का बदल गया है' में विभाजन के दर्द के तीनों पहलू मौजूद हैं। विभाजन की स्थितियों से पैदा हुए सांप्रदायिक दंगे, जिनमें हत्याएँ, आगज़नी, लूटपाट, बलात्कार आदि हैं, इन स्थितियों की जानकारी कहानी में सांकेतिक रूप में चित्रित है और स्पष्ट रूप में भी। शेरे का तीस-चालीस हत्याएँ कर चुकना, जलालपुर में लगी आग, शाहनी की हत्या, और उसकी हवेली लूटने की योजना के साथ अनेक परोक्ष संकेत भी हैं। ये घटनाएँ 1947 के दिनों में फैली सांप्रदायिक कटुता व उसके भयंकर दुष्परिणामों की स्तब्ध कर देने वाली जानकारी देती है।

26.6 विस्थापन से उत्पन्न अलगाव की यंत्रणा

'सिक्का बदल गया है' में विभाजन की पीड़ा का दूसरा मानवीय पहलू - विस्थापन व शरणार्थी की नियति से जुड़ा हुआ है। वास्तव में विभाजन से उत्पन्न विस्थापन और शरणार्थी बनना उतना ही त्रासद और पीड़ादायक अनुभव है, जितना हिंसा के अधिक

क्रूर दिखाई देते रूप। कोई व्यक्ति, जो पीढ़ियों से अपने पुरखों की परंपरा समेटे किसी विशेष गाँव, कस्बे, शहर में हो उसे अपना देश, संस्कृति, अपने जीवन का पूरा केंद्र मानकर रह रहा है, उसे अचानक वहाँ से ज़बरदस्ती उखाड़ कर एक अपरिचित जगह पर बसने के लिए विवश करना अपने आप में एक त्रासदी है।

यह विस्थापन केवल सांस्कृतिक स्तर पर ही आदमी को नहीं उखाड़ता, उसके जीवन के सर्वप्रमुख आर्थिक आधार को भी उससे छीन लेता है। किसी व्यक्ति के जीवन का सामाजिक परिवेश तथा आर्थिक आधार ही उसके जीवन की मूल्यवान वस्तु है। उसका समाज में स्थान, व्यवसाय, उसका घर-संपत्ति, यहाँ उसे जीवन में स्थिरता व स्थायीत्व प्रदान करता है। अचानक ही एक भयानक राजनीतिक तूफान उन लोगों के जीवन की स्थिरता और स्थायीत्व को नष्ट कर देता है, उनके जीवन की घूरी, उनका आर्थिक आधार, उनसे छिन जाता है और कल के शाह आज के कंगाल में बदल जाते हैं। यह दुखांत एक परिवार के साथ नहीं, लाखों लाख व्यक्तियों और परिवारों के साथ जब घटता है तो यह ऐतिहासिक त्रासदी होती है, जो सदियों तक किसी समाज व संस्कृति पर प्रभाव डालती है, जिसका दर्द सिर्फ एक पीढ़ी नहीं, कई पीढियों को भुगतना है।

'सिक्का बदल गया है' की शाहनी भी जब कंगाल और शरणार्थी बनने की पीड़ा झेलती है तो वह सिर्फ अकेली नहीं, उसके आगे की पीढ़ियाँ भी झेलती हैं। शाहनी की पीड़ा स्वयं लेखिका कृष्णा सोबती ने भी झेली है और कृष्णा सोबती द्वारा रची रचनाओं से उत्पन्न पीड़ा से कुछ और पीढ़ियाँ भी इस दर्द से गुजरेंगी।

कृष्णा सोबती 'सिक्का बदल गया है' में भले ही सवाल सीधे नहीं उठाती कि एक देश, समाज या संस्कृति की अवधारणा क्या है, लेकिन शाहनी की अपनी ज़मीनों, हवेली और गाँव के लगाव से ज़ाहिर कर देती है कि एक सामान्य व्यक्ति के लिए उसका घर-बार, गाँव-ज़मीन, नाते-रिश्ते ही उसका देश, समाज व संस्कृति है, जो किसी के चाहने से नहीं बँटती, उसे तो राजनीतिज्ञों की सत्ता-आकांक्षा एक अप्राकृतिक हिंसा द्वारा काट डालती है और उनकी इच्छा को पूरी तरह कुचलते हुए उन्हें ज़बरदस्ती किसी आरोपित देश, समाज या संस्कृति का नागरिक बनने पर विवश कर देती है। शाहनी की त्रासदी इस मानवीय अस्तित्व की पीड़ा को संकेतित करती है।

विभाजन की त्रासदी का तीसरा मानवीय पहलू अलगाव भी 'सिक्का बदल गया है' में मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित हुआ है। इस अलगाव की शिकार बनती है स्वयं शाहनी। उसके पचास वर्ष के अत्यंत मानवीय लगाव भरे जीवन को कुछ घंटों में ही इतनी बर्बर मानसिक हिंसा से काट दिया जाता है कि वह अपने पचास वर्ष के जीवन से हटने की भयंकर पीड़ा केवल अलगाव द्वारा, मोह-मुक्त होकर ही झेल सकती है। पचास वर्ष और उससे भी पहले 15-20 वर्ष का अत्यंत मोह-ममता भरा जीवन और एक ही झटके में निपट अकेलापन - शाहनी के अलगाव (Alienation) की यह स्थिति अस्तित्ववाद की किसी भी परिभाषा या व्याख्या की सीमा से परे है।

एक तरफ शाहनी का मानवीय रिश्तों व अपने गाँव-ज़मीनों से अलगाव तो दूसरी ओर शेरे आदि के चरित्र में आई विकृति- उसी मानवीय अलगाव का दूसरा पहलू है। जब व्यक्ति दौलत के लालच में माँ समान स्त्री की हत्या की सोचने लगे, तब उसका मानवीयता के मूल तत्वों से ही अलगाव होने लगता है। ऐसा व्यक्ति भी अपने इस रूप में त्रासद चरित्र है, क्योंकि वह कुछ पाने के लिए जो कुछ खो रहा है, वह कहीं अधिक

मूल्यवान है। मानवीयता किसी भी दौलत से अधिक कीमती है जो वह इस स्थिति में खो देता है।

कुल मिलाकर 'सिक्का बदल गया' देश-विभाजन की त्रासद स्थितियों के मानवीय परिवेश और उसकी पीड़ा को अत्यंत सघनता से चित्रण करने वाली कहानी है, जो अपनी रचना के पचास वर्ष बाद भी उतनी ही प्रभावी व उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी अपनी रचना-काल में थी।

26.7 सारांश

'सिक्का बदल गया' कहानी पर आधारित इकाई का अध्ययन आपने कर लिया है। विभाजन की भीषण त्रासदी पर आधारित इस कहानी में आपने इंसान के अपने परिवेश, जमीन, गाँव और घर से बेघर होने की पीड़ा को समझा है। विभाजन भारतीय समाज के जीवन में भयानक विस्फोट के रूप में प्रकट हुआ था जिससे न केवल आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ ही सामने आयी बल्कि संपूर्ण देश की व्यवस्था को झुलसा दिया था। यह एक राजनीतिक दुर्घटना नहीं थी, इससे लाखों-करोड़ों लोगों को अतीत से तोड़कर वर्तमान के अंधेरे विवर में धकेला था। जहाँ पर एक शरणार्थी की तरह जीने के लिए मजबूर लोग अपने परिवेश से पूरी तरह कट गए थे। अपनो से बिछुड़कर परायों के साथ उनकी हिकारतभरी दृष्टि को और दुर्व्यवहार को झेलते हुए अभावपूर्ण जिंदगी जीने के लिए विवश हुए थे। इसी मानवीय पीड़ा को मुखरित किया है कृष्णा सोबती की 'सिक्का बदल गया' में।

'सिक्का बदल गया' की शाहनी को भौगोलिक विभाजन के कारण अपना घर-बार, जमीन, नाते-रिश्तों को एकाएक छोड़कर परिवेश से दूर हिंदुस्तान में जाकर बसने की पीड़ा भोगना पड़ा था। हवेली और दूर-दूर तक फैली जमीन की मालकिन, कई असामियों को काम देकर उनके परिवारों का पोषण करने वाली एक समय की जमींदारीन उसे यह समझ नहीं आता कि देश का विभाजन का इंसानों को इंसानों से, उसकी जमीन, घर-बार को छोड़ने पर मजबूर करने से क्या संबंध है। सभी को चाहने वाली, प्रेम करने वाली शाहनी को शरणार्थी कैंप तक पहुँचाने आया ट्रक उसके दरवाजे पर आते ही गाँव की मुस्लिम, बड़ी बुढ़ियाँ, अन्य लोग उससे मिलने पहुँच जाते हैं। उन सब अपनो को छोड़ने की मार्मान्तक पीड़ा लेकर जब शाहनी ट्रक पर चढ़ती है तो सभी रो पड़ते हैं। सभी के मन में जैसे एक ही बात है कि वे शाहनी को नहीं रख सके। अपनी संपत्ति को छोड़ने का शाहनी को दुख नहीं था, वह उस मोह को छोड़ चुकी थी, लेकिन दुख था अपनो से बिछुड़ने का, अपनी जमीन से जुदा होने का। उसने महसूस किया था माहौल ने शेरा को भी बदल दिया, जिसे उसने अपने बच्चे की तरह पाल-पोस कर बड़ा किया था। वही शेरा दंगाइयों के साथ मिलकर हवेली को लूटने और शाहनी का कत्ल करने की योजना में शामिल हो गया था। कैंप तक पहुँचाने आए दाऊद खाँ ने शाहनी की मनःस्थिति को समझकर एक संवेदनशील इंसान की तरह कहा *"शाहनी, मन में मैल न लाना। कुछ कर सकते तो उठा न रखते। वक्त ही ऐसा है। राज पलट गया है, सिक्का बदल गया है......"*

लेकिन शाहनी के लिए सिक्का बदल जाने का, न ही हकूमत के बदल जाने का, कोई अर्थ है। उसे तो दुःख है मूल्यों के सिक्के बदल जाने का, और संबंधों को निरर्थक बना दिए जाने का। राज पलट जाने, राजनीतिक दृष्टि से सिक्का बदल जाने से मानवीय

मूल्य भी निरर्थक सिद्ध हो गये, यही उसकी अंतर्वेदना है। यही कहानी अंतर्द्वंद्व, करुणा और व्यंग्य को बहुत सुलझे रूप में अभिव्यक्त करती है। साथ ही समसामयिक संदर्भों की तल्खी से संबंधों और मूल्यों में जो विघटन उपस्थित हुआ, उसका बोध यह कहानी कराती है।

इस इकाई में आपने कृष्णा सोबती की विभाजन की मानवीय पीड़ा को अभिव्यक्त करने वाली कहानी 'सिक्का बदल गया है' पर विचार किया है। इस कहानी में शाहनी के चरित्र द्वारा व विभाजन के दिनों के परिवेश के अंकन द्वारा लेखिका ने विभाजन की मानवीय पीड़ा के विभिन्न पहलुओं - सांप्रदायिक दंगे, विस्थापन और शरणार्थी होने के दर्द के साथ ही मानवीय अलगाव की स्थितियों को भी चित्रित किया है।

26.8 प्रश्न/अभ्यास

1. 'सिक्का बदल गया' कहानी के कथा-सूत्र को बताते हुए इसका कथ्य स्पष्ट करें।
2. 'सिक्का बदल गया' के कथ्य में ही उसका उद्देश्य भी निहित है। इस कथन पर विचार करें।
3. 'सिक्का बदल गया' में शाहनी के चरित्र के माध्यम से लेखिका ने विभाजन की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। इस कथन की सोदाहरण व्याख्या करें।
4. 'सिक्का बदल गया' के परिवेश द्वारा लेखिका ने टूटते मानवीय मूल्यों के मर्म को प्रस्तुत किया है। इस कथन पर टिप्पणी करें।
5. 'सिक्का बदल गया' में विभाजन के लिए जिम्मेदार राजनीतिक सत्ता लोलुप प्रवृत्ति पर प्रकाश डालिए।

उपयोगी पुस्तकें

1. प्रतिनिधि हिंदी उपन्यास (भाग - II) - डॉ. चमन लाल (जिंदगीनामा, शीर्षक अध्याय)
2. कृष्णा सोबती, 'बादलों के घेरे' (कहानी संग्रह), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हिंदी कहानी : अस्मिता की तलाश - मधुरेश, आधार प्रकाशन प्रा.लि., पंचकुला, हरियाणा
4. कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति - राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY